

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثُرُهُمْ كَذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾ وَالشَّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٣﴾

शैतान अपनी सुनी हुई¹⁸⁶ उन पर डालते हैं और उन में अक्सर झूटे हैं¹⁸⁷ और शायरों की पैरवी गुमराह करते हैं¹⁸⁸

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢٢٤﴾ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٤﴾

क्या तुम ने न देखा कि वोह हर नाले में सरगर्दा फिरते हैं¹⁸⁹ और वोह कहते हैं जो नहीं करते¹⁹⁰

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنِّي

मगर वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये¹⁹¹ और ब कसरत अल्लाह की याद की¹⁹² और बदला लिया¹⁹³ बा'द

بَعْدَ مَا ظَلَمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ﴿٢٢٤﴾

इस के कि उन पर जुल्म हुवा¹⁹⁴ और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम¹⁹⁵ कि किस करवट पर पलटा खाएंगे¹⁹⁶

﴿٢٤﴾ سُوْرَةُ التَّمْلِ مَكِّيَّةٌ ٢٨ ﴿٢٤﴾ ﴿٢٤﴾ رُكُوْعَاتُهَا ٤

सूरए नम्ल मक्किय्या है, इस में तिरानवे आयतें और सात रकूअ हैं

इस के बा'द अल्लाह तआला उन मुशिरकों के जवाब में जो कहते थे कि मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पर शैतान उतरते हैं, येह इशाद फरमाता है : 185 : मिसल मुसैलमा वगैरा काहिनों के। 186 : जो उन्होंने न मलाएका से सुनी होती है। 187 : क्यूं कि वोह फिरशतों से सुनी हुई बातों में अपनी तरफ से बहुत झूट मिला देते हैं। हदीस शरीफ में है कि एक बात सुनते हैं तो सो झूट उस के साथ मिलते हैं और येह भी उस वक्त तक था जब तक कि वोह आस्मान पर पहुंचने से रोके न गए थे। 188 : उन के अशआर में कि उन को पढ़ते हैं रवाज देते हैं बा वुजूदे कि वोह अशआर किञ्च व बातिल होते हैं। शाने नुजूल : येह आयत शुअराए कुफफार के हक में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आलम की कौम के गुमराह लोग उन से उन अशआर को नक़ल करते थे, उन लोगों की आयत में मजम्मत फ़रमाई गई। 189 : और हर तरह की झूटी बातें बनाते हैं और हर लगव व बातिल में सुखन आराई करते हैं, झूटी मदह करते हैं, झूटी हज्व करते हैं। 190 : बुखारी व मुस्लिम की हदीस में है कि अगर किसी का जिस्म पीप से भर जाए तो येह उस के लिये इस से बेहतर है कि शेर से पुर हो। मुसल्मान शुअरा जो इस तरीके से इज्तिनाब करते हैं इस हुक्म से मुस्तरना किये गए। 191 : इस में शुअराए इस्लाम का इस्तिस्ना फ़रमाया गया, वोह हुजूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की ना'त लिखते हैं, अल्लाह तआला की हम्द लिखते हैं, इस्लाम की मदह लिखते हैं, पन्दो नसाएह लिखते हैं, इस पर अज्रो सवाब पाते हैं। बुखारी शरीफ में है कि मस्जिदे नबवी में हज़रते हस्सान के लिये मिम्बर बिछाया जाता था, वोह उस पर खड़े हो कर रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के मुफ़ाखर पढ़ते (फ़ज़ाइल बयान फ़रमाते) थे और कुफ़फार की बद गोइयों का जवाब देते थे और सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ उन के हक में दुआ फ़रमाते थे। बुखारी की हदीस में है : हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : बा'ज शेर हिक्मत होते हैं। रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की मजलिस मुबारक में अक्सर शेर पढ़े जाते थे जैसा कि तिरमिज़ी में जाबिर बिन समुरह से मरवी है। हज़रते आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने फ़रमाया कि शेर कलाम है बा'ज अच्छा होता है बा'ज बुरा, अच्छे को लो बुरे को छोड़ दो। शअबी ने कहा कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक शेर कहते थे। हज़रते अली उन सब से ज़ियादा शेर फ़रमाने वाले थे। رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ। 192 : और शेर उन के लिये जिक्के इलाही से गुफ़्तत का सबब न हो सका, बल्कि उन लोगों ने जब शेर कहा भी तो अल्लाह तआला की हम्दो सना और उस की तौहीद और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की ना'त और अस्हाबे किराम व सुलहाए उम्मत की मदह और हिक्मत व मौइज़त और जोहदो अदब में। 193 : कुफ़फार से उन की हज्व का 194 : कुफ़फार की तरफ से कि उन्होंने ने मुसल्मानों की और उन के पेशवाओं की हज्व की। उन हज़रात ने उस को दफ़अ किया और उस के जवाब दिये, येह मजमूम नहीं हैं बल्कि मुस्तहिके अज्रो सवाब हैं। हदीस शरीफ में है कि मोमिन अपनी तलवार से भी जिहाद करता है और अपनी ज़बान से भी, येह उन हज़रात का जिहाद है। 195 : या'नी मुशिरकीन जिन्हों ने सय्यिदुत्ताहिरीन अफ़ज़लुल खलक रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की हज्व की। 196 : मौत के बा'द। हज़रते इब्ने अब्बास ने फ़रमाया जहन्नम की तरफ और वोह बुरा ही ठिकाना है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

طَسَّ تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ مُّبِينٍ ١ هُدًى وَبُشْرَى

यह आयतें हैं कुरआन और रोशन किताब की² हिदायत और खुश ख़बरी

لِلْمُؤْمِنِينَ ٢ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ

ईमान वालों को वोह जो नमाज़ बरपा रखते हैं³ और ज़कात देते हैं⁴ और वोह

بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقْتُونَ ٣ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّنَّا

आखिरत पर यकीन रखते हैं वोह जो आखिरत पर ईमान नहीं लाते हम ने उन के

لَهُمْ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ٤ أُولَئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَ

कौतक (बुरे आ'माल) उन की निगाह में भले कर दिखाए हैं⁵ तो वोह भटक रहे हैं येह वोह हैं जिन के लिये बुरा अज़ाब है⁶ और

هُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ الْأَخْسَرُونَ ٥ وَإِنَّكَ لَتَلْقَى الْقُرْآنَ مِنْ لَدُنْ

येही आखिरत में सब से बढ़ कर नुक्सान में⁷ और बेशक तुम कुरआन सिखाए जाते हो हिकमत

حَكِيمٍ عَلِيمٍ ٦ إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا ٨ سَاتِيكُمْ

वाले इल्म वाले की तरफ़ से⁸ जब कि मूसा ने अपनी घर वाली से कहा⁹ मुझे एक आग नज़र पड़ी है अन्क़रीब मैं तुम्हारे पास

مِنْهَا بِخَبْرٍ أَوْ آتِيكُمْ بِشَهَابٍ قَبَسٍ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ٩ فَلَمَّا جَاءَهَا

उस की कोई ख़बर लाता हूँ या उस में से कोई चमकती चिगारी लाऊंगा कि तुम तापो¹⁰ फिर जब आग के पास आया

نُودِي أَنِّي بُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ١٠ وَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ

निदा की गई बरकत दिया गया वोह जो इस आग की जल्बा गाह में है या'नी मूसा और जो इस के आस पास हैं या'नी फिरिश्ते¹¹ और पाकी है اللَّهُ के

1 : सूरए नम्ल मक्किय्या है इस में सात 7 रकूअ और तिरानवे 93 आयतें और एक हज़ार तीन सो सतरह 1317 कलिमे और चार हज़ार सात सो निनानवे 4799 हर्फ़ हैं । 2 : जो हक़ व बातिल में इम्तियाज़ करती है और जिस में उल्मो हिकम वदीअत रखे गए हैं । 3 : और इस पर मुदावमत करते हैं और इस के शराइत व आदाब व जुम्ला हुकूक की हिफ़ाज़त करते हैं । 4 : खुशदिली से । 5 : कि वोह अपनी बुराइयों को शहवात के सबब से भलाई जानते हैं । 6 : दुन्या में कल्ल और गिरिफ़्तारी । 7 : कि इन का अन्जाम दाइमी अज़ाब है । इस के बा'द सय्यिदे आलम صَلَّ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को ख़िताब होता है : 8 : इस के बा'द हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का एक वाकिआ बयान फ़रमाया जाता है जो दकाइके इल्म व लताइफ़ हिकमत पर मुशतमिल है । 9 : मद्यन से मिस्स को सफ़र करते हुए, तारीक रात में, जब कि बर्फ़बारी से निहायत सरदी हो रही थी और रास्ता गुम हो गया था और बीबी साहिबा को दर्दे ज़ेह शुरूअ हो गया था । 10 : और सरदी की तकलीफ़ से अम्म पाओ । 11 : येह हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तहिद्यत है اللَّهُ तआला की तरफ़ से बरकत के साथ ।

الْعَلْبِينَ ٨ يُمُوسَى إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٩ وَأَلْقَى عَصَاكَ ١٠

जो रब है सारे जहां का ऐ मूसा बात यह है कि मैं ही हूँ **अल्लाह** इज्जत वाला हिक्मत वाला और अपना असा डाल दे¹²

فَلَمَّا رَأَاهَا تَهْتَرُ كَأَنهَآ جَانٌّ وَلَّى مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ١١ يُمُوسَى

फिर मूसा ने उसे देखा लहराता हुआ गोया सांप है पीठ फेर कर चला और मुड़ कर न देखा हम ने फरमाया ऐ मूसा

لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَى الْمُرْسَلُونَ ١٠ إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ

डर नहीं बेशक मेरे हुजूर रसूलों को खौफ नहीं होता¹³ हां जो कोई ज़ियादती करे¹⁴ फिर बुराई के

حُسْبًا بَعْدَ سُوءٍ فَإِنِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ١١ وَأَدْخَلَ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ

बा'द भलाई से बदले तो बेशक मैं बख़्शने वाला मेहरबान हूँ¹⁵ और अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल

تَخْرُجُ بِيضًا مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ١٢ فِي تِسْعِ آيَاتٍ إِلَى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ ١٣

निकलेगा सफ़ेद चमकता बे ऐब¹⁶ नव निशानियों में¹⁷ फिर औन और उस की कौम की तरफ़

إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِقِينَ ١٢ فَلَمَّا جَاءَهُمْ آيَاتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوا هَذَا

बेशक वोह बे हुकम लोग हैं फिर जब हमारी निशानियां आंखें खोलती उन के पास आई¹⁸ बोले यह तो

سِحْرٌ مُّبِينٌ ١٣ وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا ١٤

सरीह जादू है और उन के मुन्किर हुए और उन के दिलों में उन का यकीन था¹⁹ जुल्म और तकबुर से

فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ١٤ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا ١٥

तो देखो कैसा अन्जाम हुआ फ़सादियों का²⁰ और बेशक हम ने दावूद और सुलैमान को बड़ा इल्म अता फ़रमाया²¹

وَقَالَا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَى كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ١٥ وَ

और दोनों ने कहा सब खूबियां **अल्लाह** को जिस ने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर फ़ज़ीलत बख़्शी²² और

12 : चुनान्चे हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने ब हुकमे इलाही असा डाल दिया और वोह सांप हो गया । 13 : न सांप का न किसी और चीज़ का या'नी जब मैं उन्हें अम्न दू तो फिर क्या अन्देशा । 14 : उस को डर होगा और वोह भी जब तौबा करे 15 : तौबा क़बूल फ़रमाता हूँ और बख़्श देता हूँ । इस के बा'द हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَامُ** को दूसरी निशानी दिखाई गई और फ़रमाया गया 16 : यह निशानी है उन 17 : जिन के साथ रसूल बना कर भेजे गए हो । 18 : या'नी उन्हें मो'जिज़े दिखाए गए । 19 : और वोह जानते थे कि बेशक येह निशानियां **अल्लाह** की तरफ़ से हैं लेकिन बा वुजूद इस के अपनी ज़बानों से इन्कार करते रहे । 20 : कि गर्क कर के हलाक किये गए 21 : या'नी इल्मे क़ज़ा व सियासत । और हज़रते दावूद को पहाड़ों और परिन्दों की तस्बीह का इल्म दिया और हज़रते सुलैमान को चौपायों और परिन्दों की बोली का । (غارن) 22 : नुबुव्वत व मुल्क अता फ़रमा कर और जिन व इन्स और शयातीन को मुसख़बर कर के ।

وَرِثَ سُلَيْمِنُ دَاوُدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ عَلِمْنَا مَطِيقَ الطَّيْرِ وَأُوتِينَا

सुलैमान दावूद का जा नशीन हुवा²³ और कहा ऐ लोगो हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई और हर चीज में

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ٢٠ إِنَّ هَذَا هُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ ١٦ وَحُشِرَ لِسُلَيْمَانَ

से हम को अता हुवा²⁴ बेशक येही ज़ाहिर फ़ज़ल है²⁵ और जम्अ किये गए सुलैमान के लिये

جُنُودَهُ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ١٧ حَتَّى إِذَا آتَوْنَا

उस के लश्कर जिन्नों और आदमियों और परिन्दों से तो वोह रोके जाते थे²⁶ यहां तक कि जब च्यूटियों

عَلَى وَادِ النَّبْلِ ١٨ قَالَتْ نَبْلَةٌ يَا أَيُّهَا النَّبْلُ ادْخُلُوا مَسْكِنَكُمْ لَا

के नाले पर आए²⁷ एक च्यूटी बोली²⁸ ऐ च्यूटियों अपने घरों में चली जाओ तुम्हें

يَحِطُّبَكُمْ سُلَيْمَانَ وَجُنُودَهُ ١٩ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ١٨ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ

कुचल न डालें सुलैमान और उन के लश्कर बे ख़बरी में²⁹ तो उस की बात से मुस्कुरा कर

قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَ

हंसा³⁰ और अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं शुक्र करूं तेरे एहसान का जो तू ने³¹ मुझ पर और

عَلَى وَالِدَيَّْ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ

मेरे मां बाप पर किये और येह कि मैं वोह भला काम करूं जो तुझे पसन्द आए और मुझे अपनी रहमत से अपने उन बन्दों में शामिल कर जो तेरे कुर्वे ख़ास के

23 : नुबुव्वत व इल्म व मुल्क में 24 : या'नी ब कसरत ने'मते दुन्या व आख़िरत की हम को अता फ़रमाई गई। 25 : मरवी है कि हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को ALLAH तआला ने मशारिक व मग़ारिब अर्ज़ का मुल्क अता फ़रमाया, चालीस साल आप इस के मालिक रहे फिर तमाम दुन्या की मन्तुकत अता फ़रमाई। जिन, इन्सान, शैतान, परिन्द, चौपाए, दरिन्दे सब पर आप की हुकूमत थी और हर एक शै की ज़बान आप को अता फ़रमाई और अजीबो ग़रीब सन्अते आप के ज़माने में बरूए कार आई। 26 : आगे बढ़ने से, ताकि सब मुज्तामअ हो जाएं फिर चलाए जाते थे। 27 : या'नी ताइफ़ या शाम में उस वादी पर गुज़रे जहां च्यूटियां ब कसरत थीं। 28 : जो च्यूटियों की मलिका थी वोह लंगड़ी थी। लतीफ़ा : जब हज़रते क़तादा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ कूफ़ा में दाख़िल हुए और वहां की ख़ल्क आप की गिरवीदा हुई तो आप ने लोगों से कहा : जो चाहो दरयाफ़्त करो। हज़रते इमाम अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ उस वक़्त नौ जवान थे, आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की च्यूटी मादा थी या नर ? हज़रते क़तादा साकित हो गए, तो इमाम साहिब ने फ़रमाया कि वोह मादा थी। आप से दरयाफ़्त किया गया कि येह आप को किस तरह मा'लूम हुवा ? आप ने फ़रमाया : कुरआने करीम में इशाद हुवा : "فَأَنَّ نَبْلًا" अगर नर होती तो कुरआन शरीफ़ में "فَأَنَّ نَبْلًا" वारिद होता। (فَأَنَّ نَبْلًا) इस से हज़रते इमाम की शाने इल्म मा'लूम होती है) ग़रज़ जब उस च्यूटियों की मलिका ने हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लश्कर को देखा तो कहने लगी : 29 : येह उस ने इस लिये कहा कि वोह जानती थी कि हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام नबी हैं, साहिबे अद्ल हैं, ज़ब्र और ज़ियादती आप की शान नहीं है। इस लिये अगर आप के लश्कर से च्यूटियां कुचल जाएंगी तो बे ख़बरी ही में कुचल जाएंगी कि वोह गुज़रते हों और इस तरफ़ इल्तिफ़ात न करें। च्यूटी की येह बात हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने तीन मील से सुन ली और हवा हर शख़्स का कलाम आप के सम्प मुबारक तक पहुंचाती थी। जब आप च्यूटियों की वादी पर पहुंचे तो आप ने अपने लश्करों को ठहरने का हुक्म दिया यहां तक कि च्यूटियां अपने घरों में दाख़िल हो गईं। सैर हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की अगर्चे हवा पर थी मगर बईद नहीं है कि येह मक़ाम आप का जाए नुज़ूल हो। 30 : अम्बिया का हंसना तबस्सुम ही होता है जैसा कि अहादीस में वारिद हुवा है, वोह हज़रात क़हक़हा मार कर नहीं हंसते। 31 : नुबुव्वत व मुल्क व इल्म अता फ़रमा कर।

الصَّالِحِينَ ١٩) وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدْهُدَ ۗ أَمْ كَانَ

सजावार हैं³² और परिन्दों का जाएजा लिया तो बोला मुझे क्या हुआ कि मैं हुदहुद को नहीं देखता या वोह

مِنَ الْغَائِبِينَ ٢٠) لَا عُدَّةَ لَهُ عَدَا بَأْسٍ يَدِ الْأَوْلَا أذْبَحْنَاهُ أَوْ لِيَأْتِيَنِي

वाकेई हाज़िर नहीं ज़रूर मैं उसे सख्त अज़ाब करूंगा³³ या ज़ब्द कर दूंगा या कोई रोशन सनद

بِسُلْطَنٍ مُّبِينٍ ٢١) فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطَّتْ بِهَا لَمْ تَحْطُ بِهِ وَ

मेरे पास लाए³⁴ तो हुदहुद कुछ ज़ियादा देर न ठहरा और आ कर³⁵ अर्ज़ की कि मैं वोह बात देख आया हूँ जो हुजूर ने न देखी और

جِنَّتِكَ مِنْ سَبَائِلِ بَنِي إِيْقِينَ ٢٢) إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ

मैं शहरे सबा से हुजूर के पास एक यकीनी ख़बर लाया हूँ मैं ने एक औरत देखी³⁶ कि उन पर बादशाही कर रही है और उसे

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ٢٣) وَجَدْتُهُا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ

हर चीज़ में से मिला है³⁷ और उस का बड़ा तख़्त है³⁸ मैं ने उसे और उस की क़ौम को पाया कि **अल्लाह** को छोड़ कर

لِلشَّيْءِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَرَبِّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ

सूरज को सज्दा करते हैं³⁹ और शैतान ने उन के आ'माल उन की निगाह में संवार कर उन को सीधी राह से

السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ٢٤) إِلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبَاءَ

रोक दिया⁴⁰ तो वोह राह नहीं पाते क्यूं नहीं सज्दा करते **अल्लाह** को जो निकालता है

فِي السَّبُوتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ٢٥) اللَّهُ لَا إِلَهَ

आस्मानों और ज़मीन की छुपी चीज़ों⁴¹ और जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और ज़ाहिर करते हो⁴² **अल्लाह** है कि उस के सिवा कोई

إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ٢٦) قَالَ سَنَنْظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ

सच्चा मा'बूद नहीं वोह बड़े अर्श का मालिक है सुलैमान ने फ़रमाया अब हम देखेंगे कि तू ने सच कहा या तू

³² : हज़ुराते अम्बिया व औलिया ³³ : उस के पर उखाड़ कर या उस को उस के प्यारों से जुदा कर के या उस को उस के अक्वान का ख़ादिम बना कर या उस को गैर जानवरों के साथ कैद कर के । और हुदहुद को हस्बे मस्लहत अज़ाब करना आप के लिये हलाल था और जब परिन्द आप के लिये मुसख़्ख़र (ताबेअ) किये गए थे तो तादीब व सियासत मुक्तजाए तस्ख़ीर है । ³⁴ : जिस से उस की मा'जूरी ज़ाहिर हो । ³⁵ : निहायत इज्ज़ व इन्क़िसार और अदब व तवाज़ोअ के साथ मुआफ़ी चाह कर ³⁶ : जिस का नाम बिल्क़ीस है ³⁷ : जो बादशाहों के लिये शायान होता है ³⁸ : जिस का तूल अस्सी गज़, अर्ज़ चालीस गज़, सोने चांदी का जवाहिरात के साथ मुरस्सअ (जड़ा हुआ) ³⁹ : क्यूं कि वोह लोग आफ़ताब परस्त मजूसी थे । ⁴⁰ : सीधी राह से मुराद तरीके हक़ व दीने इस्लाम है । ⁴¹ : आस्मान की छुपी चीज़ों से मीह और ज़मीन की छुपी चीज़ों से नबातात मुराद हैं । ⁴² : इस में आफ़ताब परस्तों बल्कि तमाब बातिल परस्तों का रद है जो **अल्लाह** तंआला के सिवा किसी को भी पूजें । मक्सूद येह है कि इबादत का मुस्तहक़ सिर्फ़ वोही है जो आपनाते अर्ज़ी व समावी पर कुदरत रखता हो और जमीअ मा'लूमात का आलिम हो, जो ऐसा नहीं वोह किसी तरह मुस्तहक़ इबादत नहीं ।

الْكٰذِبِيْنَ ٢٧ اِذْهَبْ بِكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهٖ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانظُرْ

झूटों में है⁴³ मेरा येह फ़रमान ले जा कर उन पर डाल फिर उन से अलग हट कर देख

مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ٢٨ قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلٰٓئِكَةُ اِنِّيْ اَلْقَيْتُ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا كَرِيْمًا ٢٩

कि वोह क्या जवाब देते हैं⁴⁴ वोह औरत बोली ऐ सरदारो बेशक मेरी तरफ़ एक इज़्ज़त वाला ख़त डाला गया⁴⁵

اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٣٠ اَلَّا تَعْلَمُوْا عَلٰٓى

बेशक वोह सुलैमान की तरफ़ से है और बेशक वोह **अल्लाह** के नाम से है जो निहायत मेहरबान रहम वाला येह कि मुझ पर बुलन्दी न चाहो⁴⁶

وَاَتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ٣١ قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلٰٓئِكَةُ اِفْتُوْنِيْ فِىْ اَمْرِىْ مَا كُنْتُ

और गरदन रखते मेरे हुज़ूर हाज़िर हो⁴⁷ बोली ऐ सरदारो मेरे इस मुआमले में मुझे राय दो मैं किसी मुआमले में

قٰطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنَ ٣٢ قَالُوْا نَحْنُ اَوْلٰٓءُ قَوٰٓةٍ وَّاَوْلٰٓءُ اَبٰٓسٍ

कोई क़र्ई फैसला नहीं करती जब तक तुम मेरे पास हाज़िर न हो वोह बोले हम जोर वाले और बड़ी सख़्त लड़ाई

شَدِيْدًا وَّاَلَا مَرُّ اِلَيْكَ فَاَنْظِرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ٣٣ قَالَتْ اِنَّ الْمَلٰٓئِكَةَ

वाले हैं⁴⁸ और इख़्तियार तेरा है तू नज़र कर कि क्या हुक़्म देती है⁴⁹ बोली बेशक जब बादशाह

اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْا اَعِزَّةً اٰهْلِهَا اٰذِلَّةً وَّكَذٰلِكَ

किसी बस्ती में⁵⁰ दाख़िल होते हैं उसे तबाह कर देते हैं और उस के इज़्ज़त वालों को⁵¹ ज़लील और ऐसा ही

يَفْعَلُوْنَ ٣٤ وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنْظُرُوْا بِمَ يَرْجِعُ

करते हैं⁵² और मैं उन की तरफ़ एक तोहफ़ा भेजने वाली हूँ फिर देखूंगी कि एलची क्या जवाब

43 : फिर हज़रते सुलैमान **عليه السلام** ने एक मक्तूब लिखा जिस का मज़्मून येह था कि अज़ जानिब बन्दए खुदा सुलैमान बिन दावूद ब सूए बिल्कीस मलिकए शहरे सबा **عليه السلام** उस पर सलाम जो हिदायत कबूल करे, इस के बा'द मुद्दा येह कि तुम मुझ पर बुलन्दी न चाहो और मेरे हुज़ूर मुतीअ हो कर हाज़िर हो। उस पर आप ने अपनी मोहर लगाई और हुदहुद से फ़रमाया **44** : चुनान्चे हुदहुद वोह मक्तूबे गिरामी ले कर बिल्कीस के पास पहुँचा, उस वक़्त बिल्कीस के गिर्द उस के आ'यान व वुज़रा का मज़्मअ था। हुदहुद ने वोह मक्तूब बिल्कीस की गोद में डाल दिया और वोह उस को देख कर खौफ़ से लरज़ गई और फिर उस पर मोहर देख कर **45** : उस ने उस ख़त को इज़्ज़त वाला या इस लिये कहा कि उस पर मोहर लगी हुई थी, इस से उस ने जाना कि किताब का भेजने वाला जलीलुल मन्ज़िलत बादशाह है या उस मक्तूब की इब्तिदा **अल्लाह** तआला के नामे पाक से थी। फिर उस ने बताया कि वोह मक्तूब किस की तरफ़ से आया है। चुनान्चे कहा : **46** : या'नी मेरी ता'मोले इर्शाद करो और तकब्बुर न करो जैसा कि बा'ज बादशाह किया करते हैं। **47** : फ़रमां बरदाराना शान से। मक्तूब का येह मज़्मून सुना कर बिल्कीस अपने आ'याने दौलत की तरफ़ मुतवज्जेह हुई। **48** : इस से उन की मुराद येह थी कि अगर तेरी राय जंग की हो तो हम लोग इस के लिये तय्यार हैं बहादुर और शुजाअ हैं, साहिबे कुव्वत व तुवानाई हैं, कसीर फ़ौजें रखते हैं, जंग आज़्मा हैं। **49** : ऐ मलिका ! हम तेरी इत्ताअत करेगे तेरे हुक़्म के मुन्तज़िर हैं। इस जवाब में उन्हों ने येह इशारा किया कि उन की राय जंग की है या उन का मुद्दा येह हो कि हम जंगी लोग हैं राय और मशवरा हमारा काम नहीं तू खुद साहिबे अक्ल व तदबीर है हम बहर हाल तेरा इत्तिबाअ करेगे। जब बिल्कीस ने देखा कि येह लोग जंग की तरफ़ माइल हैं तो इस ने उन्हें उन की राय की ख़ता पर आगाह किया और जंग के नताइज सामने किये। **50** : अपने जोरो कुव्वत से **51** : क़त्ल और

الْمُرْسَلُونَ ﴿٢٥﴾ فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمٌ قَالَ أَتَيْدُونَنِ بِمَالٍ فَمَا آتَيْنِ اللَّهُ

ले कर पलटें⁵³ फिर जब वोह⁵⁴ सुलैमान के पास आया सुलैमान ने फरमाया क्या माल से मेरी मदद करते हो तो जो मुझे **अल्लाह** ने दिया⁵⁵

خَيْرٌ مِّمَّا آتَيْتَكُمْ بَلْ أَنْتُمْ بِهَدْيَتِكُمْ تَفْرَحُونَ ﴿٢٦﴾ اِرْجِعْ إِلَيْهِمْ

वोह बेहतर है उस से जो तुम्हें दिया⁵⁶ बल्कि तुम ही अपने तोहफे पर खुश होते हो⁵⁷ पलट जा उन की तरफ

فَلَنَأْتِيَنَّهُمْ بِجُنُودٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِنْهَا أَذِلَّةً وَهُمْ

तो जरूर हम उन पर वोह लश्कर लाएंगे जिन की उन्हें ताकत न होगी और जरूर हम उन को उस शहर से ज़लील कर के निकाल देंगे यूं कि वोह

صَغُرُونَ ﴿٢٧﴾ قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ الْأَيْكُمُ يَا تَيْبِيُّ بِعَرُشَهَا قَبْلَ أَنْ

पस्त होंगे⁵⁸ सुलैमान ने फरमाया ऐ दरबारियो तुम में कौन है कि वोह उस का तख्त मेरे पास ले आए कबल इस के कि

يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٢٨﴾ قَالَ عَفْرَيْتُ مِنَ الْجِنَّ أَنَا آتَيْتُكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ

वोह मेरे हुजूर मुतीअ हो कर हाज़िर हों⁵⁹ एक बड़ा ख़बीस ज़िन्न बोला कि वोह तख्त हुजूर में हाज़िर कर दूंगा कबल इस के कि

تَقُومَ مِنْ مَّقَامِكَ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ﴿٢٩﴾ قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ

हुजूर इज्लास बरखास्त करें⁶⁰ और मैं बेशक इस पर कुव्वत वाला अमानत दार हूँ⁶¹ उस ने अर्ज की जिस के पास

कैद और इहानत के साथ **52** : येही बादशाहों का तरीका है। बादशाहों की आदत का जो उस को इल्म था उस की बिना पर उस ने येह कहा और मुराद उस की येह थी कि जंग मुनासिब नहीं है इस में मुल्क और अहले मुल्क की तबाही व बरबादी का ख़तरा है। इस के बाद उस ने अपनी राय का इज़हार किया और कहा **53** : इस से मा'लूम हो जाएगा कि वोह बादशाह हैं या नबी क्यूं कि बादशाह इज़्ज़तो एहतिराम के साथ हदिय्या कबूल करते हैं, अगर वोह बादशाह हैं तो हदिय्या कबूल कर लेंगे और अगर नबी हैं तो हदिय्या कबूल न करेंगे और सिवा इस के कि हम उन के दीन का इत्तिबाअ करें वोह और किसी बात से राजी न होंगे। तो इस ने पांच सो गुलाम और पांच सो बांदियां बेहतरीन लिबास और जेवरों के साथ आरास्ता कर के ज़र निगार जीनों पर सुवार कर के भेजे और पांच सो ईंटें सोने की और जवाहिर से मुरस्सअ ताज और मुशको अम्बर वगैरा मअ एक ख़त के अपने कासिद के साथ रवाना किये। हुदहुद येह देख कर चल दिया और उस ने हज़रते सुलैमान के पास सब खबर पहुंचाई, आप ने हुक्म दिया कि सोने चांदी की ईंटें बना कर नव फ़रसंग के मैदान में बिछा दी जाएं और उस के गिर्द सोने चांदी से इहतते की बुलन्द दीवार बना दी जाए और बरों बहर के खूब सूरत जानवर और जिन्नात के बच्चे मैदान के दाएं बाएं हाज़िर किये जाएं। **54** : या'नी बिल्कीस का पयामी मअ अपनी जमाअत के हदिय्या ले कर **55** : या'नी दीन और नुबुव्वत और हिकमत व मुल्क **56** : माल व अस्बाबे दुन्या **57** : या'नी तुम अहले मुफ़ख़रत (मगरूर) हो ख़ज़रिफ़े दुन्या (दुन्या की ज़ीनतों) पर फ़ख़र करते हो और एक दूसरे के हदिय्ये पर खुश होते हो, मुझे न दुन्या से खुशी होती है न इस की हाज़त, **अल्लाह** तआला ने मुझे इतना कसीर अता फ़रमाया कि ओरों को न दिया, बा वुजूद इस के दीन और नुबुव्वत से मुझे को मुशररफ़ किया। इस के बाद हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** ने वफ़द के अमीर मुन्ज़िर बिन अम्र से फ़रमाया कि येह हदिय्ये ले कर **58** : या'नी अगर वोह मेरे पास मुसल्मान हो कर हाज़िर न हुए तो येह अन्जाम होगा। जब कासिद हदिय्ये ले कर बिल्कीस के पास वापस गए और तमाम वाफ़िआत सुनाए तो उस ने कहा बेशक वोह नबी हैं और हमें उन से मुक़ाबले की ताकत नहीं और उस ने अपना तख्त अपने सात महलों में से सब से पिछले महल में महफूज़ कर के तमाम दरवाजे मुक़फ़ल कर दिये और उन पर पहरेदार मुकरर कर दिये और हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** की ख़िदमत में हाज़िर होने का इन्तिज़ाम किया ताकि देखे कि आप उस को क्या हुक्म फ़रमाते हैं और वोह एक लश्करे गिरां ले कर आप की तरफ़ रवाना हुई, जिस में बारह हज़ार नवाब थे और हर नवाब के साथ हज़ारों लश्करी। जब इतने करीब पहुंच गई कि हज़रत से सिर्फ़ एक फ़रसंग का फ़ासिला रह गया **59** : इस से आप का मुद्आ येह था कि उस का तख्त हाज़िर कर के उस को **अल्लाह** तआला की कुदरत और अपनी नुबुव्वत पर दलालत करने वाला मो'जिज़ा दिखावें। बा'जों ने कहा है कि आप ने चाहा कि उस के आने से कबल उस की वज़ूअ बदल दें और उस से उस की अक़ल का इम्तिहान फ़रमाएं कि पहचान सकती है या नहीं। **60** : और आप का इज्लास सुह्र से दोपहर तक होता था। **61** : हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** ने फ़रमाया : मैं इस से जल्द चाहता हूँ।

عَلِمُ مِّنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۗ فَلَمَّا

किताब का इल्म था⁶² कि मैं उसे हज़ूर में हाज़िर कर दूंगा एक पल मारने से पहले⁶³ फिर जब

رَأَاهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهُ قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي ۗ لِيَبْلُوَنِي ۖ أَشْكُرُ

सुलैमान ने उस तख़्त को अपने पास रखा देखा कहा यह मेरे रब के फ़ज़ल से है ताकि मुझे आज्माए कि मैं शुक्र करता हूँ

أَمْ أَكْفُرُ ۗ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۗ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ

या नाशुकी और जो शुक्र करे तो वोह अपने भले को शुक्र करता है⁶⁴ और जो नाशुकी करे तो मेरा रब बे परवाह है

كَرِيمٌ ۖ قَالَ نَكِّرُوا وَالْهَاعِرُ شَهَانُظْرُ أَتَهْتَدِي ۖ أَمْ تَكُونُ مِنَ

सब ख़ूबियों वाला सुलैमान ने हुक्म दिया औरत का तख़्त उस के सामने वज़ह बदल कर बेगाना कर दो कि हम देखें कि वोह राह पाती है या उन में

الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ۖ فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهَكَذَا عِرْشُكِ ۗ قَالَتْ

होती है जो ना वाकिफ़ रहे फिर जब वोह आई उस से कहा गया क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है बोली

كَانَتْ هُوَ ۗ وَأُوتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ۖ وَصَدَّهَا مَا

गोया यह वोही है⁶⁵ और हम को इस वाकिफ़ से पहले ख़बर मिल चुकी⁶⁶ और हम फ़रमां बरदार हुए⁶⁷ और उसे रोका⁶⁸ उस

كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۗ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ ۖ قِيلَ

चीज़ ने जिसे वोह **अल्लहा** के सिवा पूजती थी बेशक वोह काफ़िर लोगों में से थी उस से कहा

لَهَا دُخِيَ الصَّرْحُ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقِهَا

गया सहन में आ⁶⁹ फिर जब उस ने उसे देखा उसे गहरा पानी समझी और अपनी साकें (पिंडलियां) खोलीं⁷⁰

قَالَ إِنَّهُ صَرْحٌ مُّسَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيرَ ۗ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَ

सुलैमान ने फ़रमाया यह तो एक चिक्ना सहन है शीशों जड़⁷¹ औरत ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया⁷² और

62 : या'नी आप के वज़ीर आसफ़ बिन बरखिया जो **अल्लहा** तआला का इस्मे आ'ज़म जानते थे । 63 : हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** ने फ़रमाया : लाओ हाज़िर करो । आसफ़ ने अर्ज़ किया : आप नबी इन्ने नबी हैं और जो रुत्बा बारगाहे इलाही में आप को हासिल है यहां किस को मुयस्सर है, आप दुआ करें तो वोह आप के पास ही होगा । आप ने फ़रमाया : तुम सच कहते हो और दुआ की उसी वक़्त तख़्त ज़मीन के नीचे नीचे चल कर हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** की कुरसी के करीब नुपूदार हुवा । 64 : कि इस शुक्र का नफ़अ खुद उस शुक्र गुज़ार की तरफ़ आइद होता है । 65 : इस जवाब से उस का कमाले अक्ल मा'लूम हुवा । अब उस से कहा गया कि येह तेरा ही तख़्त है दरवाज़ा बन्द करने कुफल लगाने पहरेदार मुक़रर करने से क्या फ़ाएदा हुवा ? इस पर उस ने कहा 66 : **अल्लहा** तआला की कुदरत और आप की सिद्दहते नुबुव्वत की, हुदहुद के वाकिफ़ से और अमीरे वफ़द से 67 : हम ने आप की इताअत और आप की फ़रमां बरदारी इख़्तियार की 68 : **अल्लहा** की इबादत व तोहीद से या इस्लाम की तरफ़ तक्दुम से 69 : वोह सहन शफ़फ़ाफ़ आबगीने का था, उस के नीचे आब जारी था, उस में मछलियां थीं और उस के वस्त में हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** का तख़्त था जिस पर आप जल्वा अफ़रोज़ थे । 70 : ताकि पानी में चल कर हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** की ख़िदमत में हाज़िर हो । 71 : येह पानी नहीं है । येह सुन कर बिल्कीस ने अपनी साकें (पिंडलियां) छुपा लीं और इस

أَسَلْتُمْ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَى ثَمُودَ

अब सुलैमान के साथ **अल्लाह** के हुजूर गरदन रखती हूं जो रब सारे जहान का⁷³ और बेशक हम ने समूद की तरफ

أَخَاهُمْ طَلْحًا أَنْ أَعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَانِ يَخْتَصِمُونَ ۖ قَالَ

उन के हमकौम सालेह को भेजा कि **अल्लाह** को पूजा⁷⁴ तो जभी वोह दो गुरौह हो गए⁷⁵ झगड़ा करते⁷⁶ सालेह ने फरमाया

يَقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ

ऐ मेरी कौम क्यूं बुराई की जल्दी करते हो⁷⁷ भलाई से पहले⁷⁸ **अल्लाह** से बख्शिश क्यूं नहीं मांगते⁷⁹

لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۖ قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِسِنِّ مَعَكَ ۖ قَالَ طَّيَّرَكُمْ

शायद तुम पर रहम हो⁸⁰ बोले हम ने बुरा शुगून लिया तुम से और तुम्हारे साथियों से⁸¹ फरमाया तुम्हारी बद शुगूनी

عِنْدَ اللَّهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ۖ وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ

अल्लाह के पास है⁸² बल्कि तुम लोग फितने में पड़े हो⁸³ और शहर में नव शख्स थे⁸⁴

يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ۖ قَالُوا اتَّقَسَمُوا بِاللَّهِ

कि जमीन में फ़साद करते और संवार न चाहते आपस में **अल्लाह** की कसमें खा कर बोले हम जरूर

لِنَبِيِّنَاهُ وَأَهْلِهِ ثُمَّ لَتَقُولَنَّ لَوْلِيَّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا

रात को छापा मारेंगे सालेह और उस के घर वालों पर⁸⁵ फिर उस के वारिस से⁸⁶ कहेंगे उस घर वालों के क़त्ल के वक़्त हम हाज़िर न थे और बेशक हम

से उस को बहुत तअज़ुब हुवा और उस ने यकीन किया कि हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** का मुल्क व हुकूमत **अल्लाह** की तरफ से है और

इन अज़ाबवात से उस ने **अल्लाह** तआला की तौहीद और आप की नुबुव्वत पर इस्तदलाल किया। अब हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** ने उस

को इस्लाम की दा'वत दी। 72 : कि तेरे ग़ैर को पूजा आफ़ताब की परस्तिश की 73 : चुनान्चे उस ने इख़्लास के साथ तौहीद व इस्लाम को

क़बूल किया और ख़ालिस **अल्लाह** तआला की इबादत इख़्तियार की। 74 : और किसी को उस का शरीक न करो 75 : एक मोमिन और

एक काफ़िर 76 : हर फ़रीक अपने ही को हक़ पर कहता और दोनों बाहम झगड़ते। काफ़िर गुरौह ने कहा : ऐ सालेह ! जिस अज़ाब का तुम

वा'दा देते हो उस को लाओ अगर रसूलों में से हो। 77 : या'नी बला व अज़ाब की 78 : भलाई से मुराद आफ़िय्यत व रहमत है। 79 : अज़ाब

नाज़िल होने से पहले, कुफ़्र से तौबा कर के, ईमान ला कर 80 : और दुन्या में अज़ाब न किया जाए। 81 : हज़रते सालेह **عَلَيْهِ السَّلَام** ने

जब मब्ज़स हुए और कौम ने तकज़ीब की इस के बाइस बारिश रुक गई, कहत हो गया, लोग भूके मरने लगे, इस को उन्होंने ने हज़रते सालेह

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की तशरीफ़ आवरी की तरफ़ निस्वत किया और आप की आमद को बद शुगूनी समझा। 82 : हज़रते इब्ने अब्बास ने

ने फ़रमाया कि बद शुगूनी जो तुम्हारे पास आई येह तुम्हारे कुफ़्र के सबब **अल्लाह** तआला की तरफ़ से आई। 83 : आज़माइश में डाले गए

या अपने दीन के बाइस अज़ाब में मुब्तला हो। 84 : या'नी समूद के शहर में जिस का नाम हिन्न है, उन के शरीफ़ ज़ादों में से नव शख्स थे

जिन का सरदार कुदार बिन सालिफ़ था, येही लोग हैं जिन्होंने ने नाका (ऊंटनी) की कूचें काटने में सई की थी। 85 : या'नी रात के वक़्त उन

को और उन की औलाद को और उन के मुत्तबईन को जो उन पर ईमान लाए हैं क़त्ल कर देंगे। 86 : जिस को उन के खून का बदला त़लब

करने का हक़ होगा।

لَصَدِقُونَ ﴿٣٩﴾ وَمَكْرُؤًا مَكَرًا وَمَكْرَنَا مَكَرًا وَأَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٠﴾ فَانظُرْ

सच्चे हैं और उन्होंने ने अपना सा मक्र किया और हम ने अपनी खुफ़या तदबीर फ़रमाई⁸⁷ और वोह गाफ़िल रहे तो देखो

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۗ أَنَا دَمَّرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥١﴾ فَبِتِلْكَ

कैसा अन्जाम हुवा उन के मक्र का हम ने हलाक कर दिया उन्हें⁸⁸ और उन की सारी क़ौम को⁸⁹ तो यह है

بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوا ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٥٢﴾ وَ

उन के घर ढए पड़े बदला उन के जुल्म का बेशक इस में निशानी है जानने वालों के लिये और

أَنْجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٣﴾ وَلَوْ طَإِذُ قَالَ لِقَوْمِهِ

हम ने उन को बचा लिया जो ईमान लाए⁹⁰ और डरते थे⁹¹ और लूत को जब उस ने अपनी क़ौम से कहा

أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٥٤﴾ أَيْبِكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً

क्या बे हयाई पर आते हो⁹² और तुम सूझ रहे हो⁹³ क्या तुम मर्दों के पास मस्ती से जाते हो

مِّنْ دُونِ النِّسَاءِ ۗ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿٥٥﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ

औरतें छोड़ कर⁹⁴ बल्कि तुम जाहिल लोग हो⁹⁵ तो उस की क़ौम का कुछ जवाब

قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوا آلَ لُوطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۗ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ

न था मगर यह कि बोले लूत के घराने को अपनी बस्ती से निकाल दो यह लोग तो

يَتَطَهَّرُونَ ﴿٥٦﴾ فَانجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلاَّ امْرَأَتَهُ ۗ قَدَرْنَاهَا مِنَ الْغَيْرِينَ ﴿٥٧﴾

सुधरा पन चाहते हैं⁹⁶ तो हम ने उसे और उस के घर वालों को नजात दी मगर उस की औरत को हम ने ठहरा दिया था कि वोह रह जाने वालों में है⁹⁷

87 : या'नी उन के मक्र की जज़ा येह दी कि उन के अज़ाब में जल्दी फ़रमाई 88 : या'नी उन नव शख़्मों को । हज़रते इब्ने अब्बास

رضي الله تعالى عنهم ने फ़रमाया कि **ابواب** तआला ने उस शब हज़रते सालेह **عليه السلام** के मकान की हिफ़ाज़त के लिये फ़िरिशते भेजे तो वोह

नव शख़्स हथियार बांध कर तलवारें खींच कर हज़रते सालेह **عليه السلام** के दरवाजे पर आए, फ़िरिशतों ने उन को पथर मारे, वोह पथर

लगते थे और मारने वाले नज़र न आते थे, इस तरह उन नव को हलाक किया । 89 : होलनाक आवाज़ से । 90 : हज़रते सालेह

91 : उन की ना फ़रमानी से, उन लोगों की ता'दाद चार हज़ार थी । 92 : इस बे हयाई से मुराद उन की बदकारी है । 93 : या'नी

इस फे'ल की क़बाहत जानते हो या येह मा'ना हैं कि एक दूसरे के सामने बे पर्दा बिल ए'लान बद फे'ली का इरतिकाब करते हो या येह कि

तुम अपने से पहले ना फ़रमानी करने वालों की तबाही और उन के अज़ाब के आसार देखते हो फिर भी इस बद आ'माली में मुब्तला हो ।

94 : बा वुजूदे कि मर्दों के लिये औरतें बनाई गई हैं, मर्दों के लिये मर्द और औरतों के लिये औरतें नहीं बनाई गई, लिहाज़ा येह फे'ल हिक्मते

इलाही की मुखालफ़त है । 95 : जो ऐसा फे'ल करते हो 96 : और इस गन्दे काम को मन्ज़ करते हैं । 97 : अज़ाब में ।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذِرِينَ ﴿٥٨﴾ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ

और हम ने उन पर एक बरसाव बरसाया⁹⁸ तो क्या ही बुरा बरसाव था डराए हुआ का तुम कहो सब खूबियां **अल्लाह** को⁹⁹

وَسَلِّمْ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ۗ اللَّهُ خَيْرٌ مَّا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

और सलाम उस के चुने हुए बन्दों पर¹⁰⁰ क्या **अल्लाह** बेहतर¹⁰¹ या उन के साख़्ता (मन घड़त) शरीक¹⁰²

98 : पथरों का । 99 : यह खिताब है सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को कि पिछली उम्मतों के हलाक पर **अल्लाह** तआला की हम्द बजा लाए । 100 : या'नी अम्बिया व मुर्सलीन पर । हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि चुने हुए बन्दों से हुजूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के अस्हाब मुराद हैं । 101 : खुदा परस्तों के लिये जो ख़ास उस की इबादत करें और उस पर ईमान लाएं और वोह उन्हें अज़ाब व हलाक से बचाए । 102 : या'नी बुत जो अपने परस्तारों के कुछ काम न आ सकें, तो जब उन में कोई भलाई नहीं वोह कोई नफ़अ नहीं पहुंचा सकते तो उन को पूजना और मा'बूद मानना निहायत बेजा है । इस के बा'द चन्द अन्वाअ ज़िक्र फ़रमाए जाते हैं जो **अल्लाह** तआला की वहदानिय्यत और उस के कमाले कुदरत पर दलालत करते हैं ।



أَمَّنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً

या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए¹⁰³ और तुम्हारे लिये आस्मान से पानी उतारा

فَأَنْبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُثْبِتُوا

तो हम ने उस से बाग़ उगाए रौनक वाले तुम्हारी ताकत न थी कि उन के पेड़

شَجَرَهَا ۚ إِنَّ مَعَ اللَّهِ لَمَعَ اللَّهُ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْدِلُونَ ۝٦٠ أَمَّنْ جَعَلَ

उगाते¹⁰⁴ क्या **अल्लाह** के साथ कोई और खुदा है¹⁰⁵ बल्कि वोह लोग राह से कतराते हैं¹⁰⁶ या वोह जिस ने

الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَالَهَا أَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ

ज़मीन बसने को बनाई और उस के बीच में नहरें निकालीं और उस के लिये लंगर बनाए¹⁰⁷ और दोनों

بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۚ إِنَّ مَعَ اللَّهِ لَمَعَ اللَّهُ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝٦١

समुन्द्रों में आड़ रखी¹⁰⁸ क्या **अल्लाह** के साथ कोई और खुदा है बल्कि उन में अक्सर जाहिल हैं¹⁰⁹

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ

या वोह जो लाचार की सुनता है¹¹⁰ जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई और तुम्हें ज़मीन के

الْأَرْضِ ۚ إِنَّ مَعَ اللَّهِ لَمَعَ اللَّهُ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝٦٢ أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ

वारिस करता है¹¹¹ क्या **अल्लाह** के साथ और खुदा है बहुत ही कम ध्यान करते हो या वोह जो तुम्हें राह

فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلِ الرِّيحَ بِشْرًا ابْنَيْنِ يَدَامَى رَاحَتِهِ ۚ

दिखाता है¹¹² खुशकी और तरी की अंधेरियों में¹¹³ और वोह कि हवाएं भेजता है अपनी रहमत के आगे खुश खबरी सुनाती¹¹⁴

إِنَّ مَعَ اللَّهِ لَمَعَ اللَّهُ ۚ تَعَلَى اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝٦٣ أَمَّنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ

क्या **अल्लाह** के साथ कोई और खुदा है बरतर है **अल्लाह** उन के शिक से या वोह जो खल्क की इब्तिदा फ़रमाता है फिर उसे

103 : अज़ीम तरीन अश्या जो मुशाहदे में आती हैं और **अल्लाह** तअ़ाला की कुदरते अज़ीमा पर दलालत करती हैं उन का ज़िक्र फ़रमाया । मा'ना येह हैं कि क्या बुत बेहतर हैं या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन जैसी अज़ीम और अज़ीब मख़्लूक बनाई । 104 : येह तुम्हारी कुदरत में न था । 105 : क्या येह दलाइले कुदरत देख कर ऐसा कहा जा सकता है ? हरगिज़ नहीं, वोह वाहिद है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं । 106 : जो उस के लिये शरीक ठहराते हैं । 107 : वज़ी पहाड़ जो उसे जुम्बिश से रोकते हैं । 108 : कि खारी मीठे मिलने न पाएं । 109 : जो अपने रब की तौहीद और उस के कुदरत व इख़्तियार को नहीं जानते और उस पर ईमान नहीं लाते । 110 : और हाज़त रवाई फ़रमाता है । 111 : कि तुम इस में सुकूनत करो और करनन बअ-द करनन इस में मुतसर्रिफ़ रहो । 112 : तुम्हारे मनाज़िल व मकासिद की 113 : सितारों से और अ़लामतों से । 114 : रहमत से मुराद यहां बारिश है ।

يُعِيدُهُ وَمَنْ يَرِزُّكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ اللَّهِ ۗ قُلْ

दोबारा बनाएगा¹¹⁵ और वोह जो तुम्हें आस्मानों और ज़मीन से रोज़ी देता है¹¹⁶ क्या **अल्लाह** के साथ कोई और खुदा है तुम फ़रमाओ

هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝٢١ قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَ

कि अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो¹¹⁷ तुम फ़रमाओ खुद ग़ैब नहीं जानते जो कोई आस्मानों और

الْأَرْضِ الْغَيْبِ إِلَّا اللَّهُ ۗ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝٢٢ بَلْ

ज़मीन में हैं मगर **अल्लाह**¹¹⁸ और उन्हें ख़बर नहीं कि कब उठाए जाएंगे क्या

أَدْرَكَ عَلَيْهِمْ فِي الْآخِرَةِ ۗ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْهَا ۗ بَلْ هُمْ مِنْهَا

उन के इल्म का सिल्लिसला आख़िरत के जानने तक पहुंच गया¹¹⁹ कोई नहीं वोह उस की तरफ़ से शक में हैं¹²⁰ बल्कि वोह उस से

عَمُونَ ۝٢٣ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاءُ وُنَا آيِنَا

अन्धे हैं और काफ़िर बोले क्या जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जाएंगे क्या हम फिर

لُخْرَجُونَ ۝٢٤ لَقَدْ وَعَدْنَا هَذَا نَحْنُ وَآبَاءُ وُنَا مِنْ قَبْلُ ۗ إِنْ هَذَا

निकाले जाएंगे¹²¹ बेशक इस का वा'दा दिया गया हम को और हम से पहले हमारे बाप दादाओं को येह तो

إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝٢٥ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ

नहीं मगर अगलों की कहानियां¹²² तुम फ़रमाओ ज़मीन में चल कर देखो कैसा

كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝٢٦ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ مِمَّا

हुवा अन्जाम मुजरिमों का¹²³ और तुम इन पर ग़म न खाओ¹²⁴ और इन के मक़्र से दिलतंग

115 : उस की मौत के बा'द । अगर्चे मौत के बा'द जिन्दा किये जाने के कुफ़ार मुक़र व मो'तरिफ़ न थे, लेकिन जब कि इस पर बराहीन काइम हैं तो उन का इक़्ार न करना कुछ काबिले लिहाज़ नहीं बल्कि जब वोह इब्तिदाइ पैदाइश के काइल हैं तो उन्हें इआदे का काइल होना पड़ेगा क्यूं कि इब्तिदा इआदे पर दलालते क्विय्या करती है, तो अब उन के लिये कोई जाए उज़्र व इन्कार बाकी नहीं रही । **116** : आस्मान से बारिश और ज़मीन से नबातात । **117** : अपने इस दा'वे में कि **अल्लाह** के सिवा और भी मा'बूद हैं, तो बताओ जो जो सिफ़ात व कमालात ऊपर ज़िक्र किये गए वोह किस में हैं और जब **अल्लाह** के सिवा ऐसा कोई नहीं तो फिर किसी दूसरे को किस तरह मा'बूद ठहराते हो ? यहां "هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ" फ़रमा कर उन के इज़्ज व बुत्लान का इज़हार मन्ज़ूर है । **118** : वोही जानने वाला है, ग़ैब का उस को इख़्तियार है, जिसे चाहे बताए, चुनान्चे अपने प्यारे अम्बिया को बताता है जैसा कि सूए आले इमरान में है । "وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْهِرَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مَنْ رُسُلَهُ مِنْ نَشَاءٍ" । या'नी **अल्लाह** की शान नहीं कि तुम्हें ग़ैब का इल्म दे, हां **अल्लाह** चुन लेता है अपने रसूलों में से जिसे चाहे । और ब कसरत आयात में अपने प्यारे रसूलों को ग़ैबी उलूम अता फ़रमाने का ज़िक्र फ़रमाया गया और खुद इसी परे में इस से अगले रुकूअ में वारिद है । "وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ" । या'नी जितने ग़ैब हैं आस्मान व ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में हैं । शाने नुज़ूल : येह आयत मुशिकीन के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से क़ियामत के आने का वक़्त दरयाफ़्त किया था । **119** : और उन्हें क़ियामत काइम होने का इल्म व यक़ीन हासिल हो गया जो वोह उस का वक़्त दरयाफ़्त करते हैं ? **120** : उन्हें अभी तक क़ियामत के आने का यक़ीन नहीं है **121** : अपनी क़ब्रों से जिन्दा ? **122** : या'नी (مَعَادًا لِلَّهِ) झूटी बातें । **123** : कि वोह इन्कार के सबब अज़ाब से

يَسْكُرُونَ ﴿٤٠﴾ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤١﴾ قُلْ

न हो¹²⁵ और कहते हैं कब आएगा यह वा'दा¹²⁶ अगर तुम सच्चे हो तुम फ़रमाओ

عَسَى أَنْ يَكُونَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ

करीब है कि तुम्हारे पीछे आ लगी हो बा'ज' वोह चीज़ जिस की तुम जल्दी मचा रहे हो¹²⁷ और बेशक तेरा रब

لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٤٣﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ

फ़ज़ल वाला है आदमियों पर¹²⁸ लेकिन अक्सर आदमी हक़ नहीं मानते¹²⁹ और बेशक तुम्हारा रब

لَيَعْلَمُ مَا تَكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٤٤﴾ وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ

जानता है जो उन के सीनों में छुपी है और जो वोह ज़ाहिर करते हैं¹³⁰ और जितने ग़ैब हैं आस्मान

وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٤٥﴾ إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي

और ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में हैं¹³¹ बेशक येह कुरआन ज़िक्र फ़रमाता है बनी

إِسْرَائِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٤٦﴾ وَإِنَّهُ لَهْدَىٰ وَ

इसराईल से अक्सर वोह बातें जिस में वोह इख़िलाफ़ करते हैं¹³² और बेशक वोह हिदायत और

رَاحَةً لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ

रहमत है मुसलमानों के लिये बेशक तुम्हारा रब उन के आपस में फैसला फ़रमाता है अपने हुक़म से और वोही है इज़्ज़त वाला

الْعَلِيمُ ﴿٤٨﴾ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۗ إِنَّكَ عَلَىٰ الْحَقِّ الْمُبِينِ ﴿٤٩﴾ إِنَّكَ لَا

इल्म वाला तो तुम **اللَّهُ** पर भरोसा करो बेशक तुम रोशन हक़ पर हो बेशक तुम्हारे

تُسَبِّحُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسَبِّحُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٥٠﴾ وَمَا

सुनाए नहीं सुनते मुर्दे¹³³ और न तुम्हारे सुनाए बहरे पुकार सुनें जब फिरें पीठ दे कर¹³⁴ और

हलाक किये गए । 124 : इन के ए'राज़ व तक़ीब करने और इस्लाम से महरूम रहने के सबब 125 : क्यूं कि **اللَّهُ** आप का हाफ़िज़ो नासिर है । 126 : या'नी येह वा'दए अज़ाब कब पूरा होगा 127 : या'नी अज़ाबे इलाही । चुनान्चे वोह अज़ाब रोजे बद्र उन पर आ ही गया और बाकी को वोह बा'दे मौत पाएंगे । 128 : इसी लिये अज़ाब में ताख़ीर फ़रमाता है । 129 : और शुक्र गुज़ारी नहीं करते और अपनी जहालत से अज़ाब की जल्दी करते हैं । 130 : या'नी रसूले करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के साथ अ़दावत रखना और आप की मुख़ालफ़त में मक्कारियां करना सब कुछ **اللَّهُ** तआला को मा'लूम है, वोह इस की सज़ा देगा । 131 : या'नी लौहे महफूज़ में सब्त हैं और जिन्हें उन का देखना ब फ़ज़ले इलाही मुयस्सर है उन के लिये ज़ाहिर हैं । 132 : दीनी उमूर में । अहले किताब ने आपस में इख़िलाफ़ किया उन के बहुत फ़िर्के हो गए और आपस में ला'न ता'न करने लगे तो कुरआने करीम ने इस का बयान फ़रमाया । ऐसा बयान किया कि अगर वोह इन्साफ़ करें और इस को कबूल करें और इस्लाम लाएं तो उन में येह बाहमी इख़िलाफ़ बाकी न रहे । 133 : मुर्दे से मुराद यहां कुफ़्फ़र हैं जिन के दिल मुर्दा हैं । चुनान्चे इसी आयत में उन के मुक़ाबिल अहले ईमान का ज़िक्र फ़रमाया । "إِنْ تُسْمِعِ الْأَمَّنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا" जो लोग इस आयत से मुर्दे के न सुनने

أَنْتَ يَهْدِي الْعُيَّ عَنْ صَلَاتِهِمْ ۖ إِنَّ تَسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا

136 हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं 136 अन्धों को 135 उन की गुमराही से तुम हिदायत करने वाले नहीं तुम्हारे सुनाए तो वोही सुनते हैं

فَهُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٨١﴾ وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ

138 और वोह मुसलमान हैं और जब बात उन पर आ पड़ेगी 137 हम ज़मीन से उन के लिये एक चौपाया निकालेंगे

الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ﴿٨٢﴾ وَيَوْمَ

और जिस दिन और जिस लिये कि लोग हमारी आयतों पर ईमान न लाते थे 140 जो लोगों से कलाम करेगा 139 इस लिये कि लोग हमारी आयतों पर ईमान न लाते थे

نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّنْ يُّكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿٨٣﴾

141 तो उन के अगले रोके जाएंगे कि पिछले उन से आ मिलें उठाएंगे हम हर गुरौह में से एक फ़ौज जो हमारी आयतों को झुटलाती है

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ وَقَالَ أَكْذَبْتُمْ بآيَاتِي وَلَمْ تُحِطُوا بِهَا عِلْمًا أَمْ آذًا

या क्या 143 था पहुंचता था 143 यहां तक कि जब सब हाज़िर हो लेंगे 142 फ़रमाएगा क्या तुम ने मेरी आयतें झुटलाई हालां कि तुम्हारा इल्म उन तक न पहुंचता था

كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يَظِقُونَ ﴿٨٥﴾

146 बोलते 146 और बात पड़ चुकी उन पर 145 उन के जुल्म के सबब तो वोह अब कुछ नहीं काम करते थे 144

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لَيْسَكُنْؤَافِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۗ إِنَّ فِي

क्या उन्होंने ने न देखा कि हम ने रात बनाई कि इस में आराम करें और दिन को बनाया सुझाने (दिखाने) वाला बेशक

पर इस्तदलाल करते हैं उन का इस्तदलाल गुलत है, चूँकि यहां मुर्दा कुफ़्फ़ार को फ़रमाया गया और इन से भी मुल्लक़न हर कलाम के

सुनने की नफ़ी मुराद नहीं है बल्कि पन्दो मौइज़त और कलामे हिदायत के ब सम्प क़बूल सुनने की नफ़ी है (या'नी सुन कर क़बूल नहीं

करते) और मुराद यह है कि काफ़िर मुर्दा दिल हैं कि नसीहत से मुन्तफ़ेअ नहीं होते। इस आयत के मा'ना येह बताना कि मुर्दे नहीं सुनते

बिल्कुल गुलत है, सहीह अहादीस से मुर्दों का सुनना साबित है। 134 : मा'ना येह हैं कि कुफ़्फ़ार ग़ायते ए'राज व रू गर्दानी से मुर्दे और बहरे

के मिस्ल हो गए हैं कि उन्हें पुकारना और हक़ की दा'वत देना किसी तरह नाफ़ेअ नहीं होता। 135 : जिन की बसीरत जाती रही और दिल

अन्धे हो गए। 136 : जिन के पास समझने वाले दिल हैं और जो इल्मे इलाही में सअदते ईमान से बहरा अन्दोज़ होने वाले हैं।

137 : या'नी उन पर ग़ज़बे इलाही होगा और अज़ाब वाजिब हो जाएगा और हुज्जत पूरी हो चुकेगी इस तरह कि लोग

(بعضاؤى وكبيرواوالاسودودمارك) तर्क कर देंगे और उन की दुरुस्ती की कोई उम्मीद बाक़ी न रहेगी या'नी क़ियामत क़रीब हो जाएगी और उस की

अ़लामतें ज़ाहिर होने लगेंगी और उस वक़्त तौबा नफ़्अ न देगी। 138 : उस चौपाए को दाब्बतुल अर्द कहते हैं। येह अज़ीब शक़ल का जानवर

होगा जो कोहे सफ़ा से बरआमद हो कर तमाम शहरों में बहुत जल्द फ़िरेगा, फ़साहत के साथ कलाम करेगा, हर शख़्स की पेशानी पर एक

निशान लगाएगा, ईमानदारों की पेशानी पर अ़साए मूसा عَلَيْهِ السّلام से नूरानी ख़त खींचेगा, काफ़िर की पेशानी पर हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السّلام

की अंगुश्टरी से सियाह मोहर लगाएगा। 139 : ब ज़बाने फ़सीह और कहेगा "هَذَا مُؤْمِنٌ وَهَذَا كَافِرٌ" येह मोमिन है और येह काफ़िर है। 140 :

या'नी कुरआने पाक पर ईमान न लाते थे जिस में बअस व हिसाब व अज़ाब व ख़ुरूजे दाब्बतुल अर्द का बयान है। इस के बा'द की आयत

में क़ियामत का बयान फ़रमाया जाता है। 141 : जो कि हम ने अपने अम्बिया पर नाज़िल फ़रमाई। फ़ैज से मुराद जमाअते कसीरा है। 142 :

रोज़े क़ियामत मौक़िफे हिसाब में। 143 : और तुम ने उन की मा'रिफ़त हासिल न की थी बिग़ैर सोचे समझे ही उन आयतों का इन्कार कर

दिया। 144 : जब तुम ने उन आयतों को भी नहीं, सोचा तुम बेकार तो नहीं पैदा किये गए थे। 145 : अज़ाब साबित हो चुका 146 : कि उन

के लिये कोई हुज्जत और कोई गुफ़्तगू बाक़ी नहीं है। एक क़ौल येह भी है कि अज़ाब उन पर इस तरह छ़ा जाएगा कि वोह बोल न सकेंगे।

ذَلِكَ لَا يَتْلَقُومِ يَوْمٌ مُنُونَ ﴿٨٦﴾ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَمَنْ فَرَعَ مَنْ

इस में ज़रूर निशानियां हैं उन लोगों के लिये कि ईमान रखते हैं¹⁴⁷ और जिस दिन फूँका जाएगा सूर¹⁴⁸ तो घबराए जाएंगे

فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ۗ وَكُلُّ أَتَوْهُ

जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं¹⁴⁹ मगर जिसे खुदा चाहे¹⁵⁰ और सब उस के हुज़ूर हाज़िर हुए

ذَخِيرِينَ ﴿٨٧﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۗ

अज़िज़ी करते¹⁵¹ और तू देखेगा पहाड़ों को खयाल करेगा कि वोह जमे हुए हैं और वोह चलते होंगे बादल की चाल¹⁵²

صُنِعَ اللَّهُ الَّذِي أَتَقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۗ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ﴿٨٨﴾ مَنْ

येह काम है **अल्लाह** का जिस ने हिकमत से बनाई हर चीज़ बेशक उसे ख़बर है तुम्हारे कामों की जो

جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۗ وَهُمْ مِّنْ قَرَعٍ يَوْمَئِذٍ أَمُونَ ﴿٨٩﴾ وَ

नेकी लाए¹⁵³ उस के लिये उस से बेहतर सिला है¹⁵⁴ और उन को उस दिन की घबराहट से अमान है¹⁵⁵ और

مَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ ۗ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا

जो बदी लाए¹⁵⁶ तो उन के मुँह औँधाए गए आग में¹⁵⁷ तुम्हें क्या बदला मिलेगा मगर उसी का

كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٠﴾ إِنبَأُ مَرْتٌ أَنْ أَعْبَدَ رَبَّ هَذِهِ الْبَلَدَةِ الَّذِي

जो करते थे¹⁵⁸ मुझे तो येही हुक्म हुवा है कि पूजू उस शहर के रब को¹⁵⁹ जिस ने उसे

147 : और आयत में बअस बा'दल मौत पर दलील है, इस लिये कि जो दिन की रोशनी को शब की तारीकी से और शब की तारीकी को दिन की रोशनी से बदलने पर कादिर है वोह मुर्दे को ज़िन्दा करने पर भी कादिर है। नीज़ इन्क़लाबे लैलो नहार से येह भी मा'लूम होता है कि इस में उन की दुन्यवी ज़िन्दगी का इन्तिज़ाम है तो येह अबस नहीं किया गया, बल्कि इस ज़िन्दगानी के आ'माल पर अज़ाब व सवाब का तरतुब मुक्तजाए हिकमत है। और जब दुन्या दारुल अमल है तो ज़रूरी है कि एक दारे आखिरत भी हो वहां की ज़िन्दगानी में यहां के आ'माल की जज़ा मिले। 148 : और इस के फूंकने वाले हज़रते इसराफ़ील **عَلَيْهِ السَّلَام** होंगे। 149 : ऐसा घबराना जो सबबे मौत होगा। 150 : और जिस के क़ल्ब को **अल्लाह** तआला सुकून अता फ़रमाए। हज़रते अबू हुरैरा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है कि येह शुहदा हैं जो अपनी तलवारें गलों में हमाइल किये अशं के गिर्द हाज़िर होंगे। हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया वोह शुहदा हैं इस लिये कि वोह अपने रब के नज़दीक ज़िन्दा हैं **فُرِعَ** (ऐसा खौफ़ जो मौत का सबब हो) उन को न पहुंचेगा। एक कौल येह है कि नफ़खे के बा'द हज़रते जिब्रील व मीकाईल व इसराफ़ील व इज़राईल ही बाकी रहेंगे। 151 : या'नी रोचे कियामत, सब लोग बा'दे मौत ज़िन्दा किये जाएंगे और मौक़िफ़ में **अल्लाह** तआला के हुज़ूर अज़िज़ी करते हाज़िर होंगे। सीगए माज़ी से ता'बीर फ़रमाना तहक्कुक् व वुकूअ के लिये है। 152 : मा'ना येह हैं कि नफ़खे के वक़्त पहाड़ देखने में तो अपनी जगह साबित व काइम मा'लूम होंगे और हकीकत में वोह मिस्ल बादलों के निहायत तेज़ चलते होंगे जैसे कि बादल वगैरा बड़े जिस्म चलते हैं मुतहरिक मा'लूम नहीं होते यहां तक कि वोह पहाड़ ज़मीन पर गिर कर उस के बराबर हो जाएंगे। फिर रेज़ा रेज़ा हो कर बिखर जाएंगे। 153 : नेकी से मुराद कलिमए तौहीद की शहादत है। बा'ज़ मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि इज़्लासे अमल। और बा'ज़ ने कहा कि हर ताअत जो **अल्लाह** के लिये की हो। 154 : जन्नत और सवाब 155 : जो खौफ़ अज़ाब से होगी। पहली घबराहट जिस का ऊपर की आयत में ज़िक्र हुवा है वोह इस के इलावा है। 156 : या'नी शिर्क 157 : या'नी वोह औँधे मुँह आग में डाले जाएंगे और जहन्नम के खाज़िन उन से कहेंगे 158 : या'नी शिर्क और मअ़सी। और **अल्लाह** तआला अपने रसूल से फ़रमाएगा कि आप फ़रमा दीजिये कि 159 : या'नी मक्कए मुकर्रमा के। और अपनी इबादत उस रब के साथ ख़ास करूं। मक्कए मुकर्रमा का ज़िक्र इस लिये है कि वोह नबिय्ये करीम

حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ ۗ وَأَمْرٌ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩١﴾ وَأَنْ

हरमत वाला किया है¹⁶⁰ और सब कुछ उसी का है और मुझे हुक्म हुआ है कि फ़रमां बरदारों में हों और यह कि

أَتْلُوا الْقُرْآنَ ۚ فَمِنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ ضَلَّ

कुरआन की तिलावत करूँ¹⁶¹ तो जिस ने राह पाई उस ने अपने भले को राह पाई¹⁶² और जो बहके¹⁶³

فَقُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ أَخْبَأْتُ لَكُمْ إِلَهُكُمُ الَّذِي كَفَرْتُمْ بِهِ فَأَلْبَسُوا ثِيَابًا كَمَا لَبَسَ الْمُكْفِرِينَ ۚ الْكُفْرُ أَشَدُّ عَذَابًا وَأَلْوَنُ ۚ وَمَا تَشَاءُونَ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٢﴾

तो फ़रमा दो कि मैं तो येही डर सुनाने वाला हूँ¹⁶⁴ और फ़रमाओ कि सब खूबियां **اللَّهُ** के लिये हैं अन्क़रीब वोह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाएगा

فَتَعْرِفُونَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

तो उन्हें पहचान लो¹⁶⁵ और ऐ महबूब तुम्हारा रब ग़ाफ़िल नहीं ऐ लोगो तुम्हारे आ'माल से

﴿٩٣﴾ ﴿٩٢﴾ ﴿٩١﴾ ﴿٩٠﴾ ﴿٨٩﴾ ﴿٨٨﴾ ﴿٨٧﴾ ﴿٨٦﴾ ﴿٨٥﴾ ﴿٨٤﴾ ﴿٨٣﴾ ﴿٨٢﴾ ﴿٨١﴾ ﴿٨٠﴾ ﴿٧٩﴾ ﴿٧٨﴾ ﴿٧٧﴾ ﴿٧٦﴾ ﴿٧٥﴾ ﴿٧٤﴾ ﴿٧٣﴾ ﴿٧٢﴾ ﴿٧١﴾ ﴿٧٠﴾ ﴿٦٩﴾ ﴿٦٨﴾ ﴿٦٧﴾ ﴿٦٦﴾ ﴿٦٥﴾ ﴿٦٤﴾ ﴿٦٣﴾ ﴿٦٢﴾ ﴿٦١﴾ ﴿٦٠﴾ ﴿٥٩﴾ ﴿٥٨﴾ ﴿٥٧﴾ ﴿٥٦﴾ ﴿٥٥﴾ ﴿٥٤﴾ ﴿٥٣﴾ ﴿٥٢﴾ ﴿٥١﴾ ﴿٥٠﴾ ﴿٤٩﴾ ﴿٤٨﴾ ﴿٤٧﴾ ﴿٤٦﴾ ﴿٤٥﴾ ﴿٤٤﴾ ﴿٤٣﴾ ﴿٤٢﴾ ﴿٤١﴾ ﴿٤٠﴾ ﴿٣٩﴾ ﴿٣٨﴾ ﴿٣٧﴾ ﴿٣٦﴾ ﴿٣٥﴾ ﴿٣٤﴾ ﴿٣٣﴾ ﴿٣٢﴾ ﴿٣١﴾ ﴿٣٠﴾ ﴿٢٩﴾ ﴿٢٨﴾ ﴿٢٧﴾ ﴿٢٦﴾ ﴿٢٥﴾ ﴿٢٤﴾ ﴿٢٣﴾ ﴿٢٢﴾ ﴿٢١﴾ ﴿٢٠﴾ ﴿١٩﴾ ﴿١٨﴾ ﴿١٧﴾ ﴿١٦﴾ ﴿١٥﴾ ﴿١٤﴾ ﴿١٣﴾ ﴿١٢﴾ ﴿١١﴾ ﴿١٠﴾ ﴿٩﴾ ﴿٨﴾ ﴿٧﴾ ﴿٦﴾ ﴿٥﴾ ﴿٤﴾ ﴿٣﴾ ﴿٢﴾ ﴿١﴾

सूरए कसस मक्किय्या है, इस में अठासी आयतें और नव रुकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

طَسْمًا ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾ نَتْلُو عَلَيْكَ مِنْ نَبَأِ مُوسَىٰ

येह आयतें हैं रोशन किताब की² हम तुम पर पढ़ें मूसा

وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣﴾ إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَ

और फ़िरऔन की सच्ची ख़बर उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं बेशक फ़िरऔन ने ज़मीन में ग़लबा पाया था³ और

جَعَلَ أَهْلَهَا شِيَعًا يَسْتَضِعُّ طَائِفَةً مِنْهُمْ يُدَّبِرُكُمْ أَبْنَاءَهُمْ وَ

उस (ज़मीन) के लोगों को अपना ताबेअ बना लिया उन में एक गुरौह को⁴ कमज़ोर देखता उन के बेटों को ज़ब्द करता और

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का वतन और वहुय का जाए नुज़ूल है। 160 : कि वहां न किसी इन्सान का खून बहाया जाए न कोई शिकार मारा

जाए न वहां की घांस काटी जाए। 161 : मख़लूके खुदा को ईमान की दा'वत देने के लिये। 162 : उस का नपअ व सवाब वोह पाएगा

163 : और रसूले खुदा की इताअत न करे और ईमान न लाए 164 : मेरे ज़िम्मे पहुंचा देना था वोह मैं ने अन्नाम दिया (هَذِهِ آيَةٌ نَسَخْنَا آيَةَ الْفِتَالِ)

165 : इन निशानियों से मुराद शक्के कमर वगैरा मो'जिजात हैं और वोह उकूबतें जो दुन्या में आई जैसे कि बद्र में कुप्फ़ार का कत्ल होना,

कैद होना, मलाएका का उधें मारना। 1 : सूरए कसस मक्किय्या है सिवाए चार आयतों के जो "الَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابَ" से शुरूअ हो कर

"الَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابَ" पर ख़त्म होती हैं, और इस सूत में एक आयत "إِنَّ الَّذِي فَرَضَ" ऐसी है जो मक्कए मुकर्रमा और मदीनए तथ्यबा के

दरमियान नाज़िल हुई। इस सूत में नव 9 रुकूअ अठासी 88 आयतें और चार सो इक्तालीस 441 कलिमे और पांच हज़ार आठ सो 5800

हर्फ़ हैं। 2 : जो हक़ को बातिल से मुमताज़ करती है। 3 : या'नी सर ज़मीने मिस्र में उस का तसल्लुत था और वोह जुल्मो तकब्बुर में इन्तिहा

को पहुंच गया था, हत्ता कि उस ने अपनी अब्दिय्यत और बन्दा होना भी भुला दिया था। 4 : या'नी बनी इसराईल को।

الْمَزَلُ الْخَامِسُ ﴿٥﴾